वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

# वेदान्त पीयूष

वर्ष २४ जून - २०२४ प्रकाशन - ०६

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

## जून 2024

प्रकाशक

**वेदान्त आश्रम,**

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

# विषय सूचि

जून 2024

अहमाकाशवत्सर्व बहिरन्तर्गतोऽच्युतः।
सदा सर्वसमः शुद्धो निःसंगो निर्मलोऽचलः॥

(श्लोक - ३५)

मैं आकाश की तरह सब के अन्दर-बाहर व्याप्त, अपरिवर्तनशील, सदा और सर्वत्र समान, शुद्ध, असंग, निर्मल और अचल हूं।

सन्देश
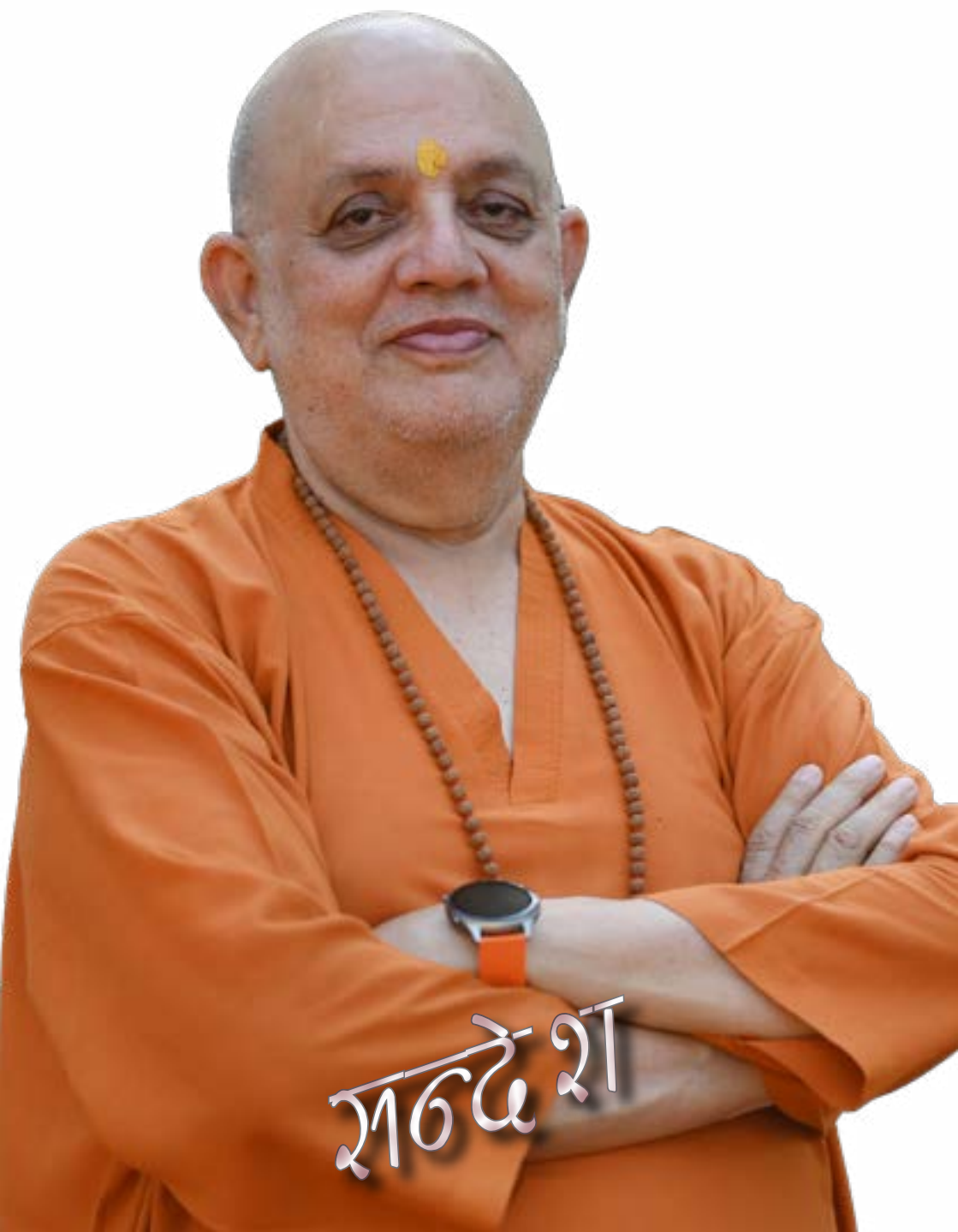
# स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ के लक्षण में भगवान ने बताया कि जो योग से रहित है, उसका मन समाहित नहीं हो पाता है। योगयुक्त वह होता है जो अपने रागादि से मुक्त, निष्काम व निरपेक्ष होकर ईश्वर का सेवक बनकर जीता है। शास्त्र-गुरु वचनों के प्रति श्रद्धा होने से दीनता से मुक्त होकर पूर्णता की श्रद्धा से युक्त होकर जीता है। उसका मन शान्त, समाहित होकर शास्त्रचिन्तन करके अपने स्वस्वरूप में समाहित हो पाता है। तद्विपरीत जो अपेक्षावान, बाह्य विषयों में सुख-दुःख की कल्पना करके उसके राग-द्वेष से युक्त, पराधीन है। उसका मन सतत अशान्त, विक्षिप्त होता है। उसका मन शान्त-समाहित नहीं हो पाता।

अयुक्त के मन की अस्थिरता का हेतु भगवान इन्द्रियों में दम रूप गुण का अर्थात् इन्द्रिय संयम का अभाव बताते हैं। इन्द्रिय

का संयम / निग्रह अर्थात् प्रामाणिक निश्चयों के अनुरूप जीने का सामर्थ्य। इन्द्रिय निग्रह के अभाव मे व्यक्तित्व में समग्रता नहीं होती। जब तक समग्रता का अभाव है, तब तक ज्ञान बौद्धिक ही रहता हैं। मन में पूर्व संस्कार व महत्वबुद्धि से युक्त, राग-द्वेष की तीव्रता के कारण इन्द्रियां स्वच्छन्द होकर अपने-अपने विषयों में भागती है। हमने ही अज्ञानवशात् तत्तद् विषयों में महत्वबुद्धि स्थापित करके इन्द्रियों को प्रेरित किया है। तदुपरान्त संस्कारों के कारण इन्द्रियों को एक मोमेण्टं अर्थात् संवेग मिल गया है। जिस प्रकार किसी मदिरा के व्यसनी में पहली बार मदिरापान से कोई सुख की अनुभूति नहीं होती है किन्तु उसके प्रति महत्वबुद्धि स्थापित करके इन्द्रियों को उसके लिए प्रशिक्षित किया, तब एक समय ऐसा आता है कि अब कितना भी तीव्र संकल्प करने पर भी इन्द्रियों की उसकी तरफ प्रवणता मन को बलात् खिंच ले जाती है। उस समय उसका विवेक कुछ काम नहीं आता है।

उसी प्रकार पूर्व संस्कारों के वशीभूत इन्द्रियां स्वच्छन्दता से जंगली घोड़ों की तरह अपने अपने विषयों की और आकृष्ट होती है। इन्द्रियों को अब संवेग मिल चूका है। अतः बुद्धि के प्रामाणिक निश्चयों के अनुरूप मन की भावना में परिवर्तन करना होगा। तथा उसके अनुरूप इन्द्रियों को भी प्रशिक्षित करना होगा।

यदि इन्द्रियों को संयमित नहीं किया तो मन की वृत्ति सतत बहिर्मुख रहकर प्रामाणिक निश्चयों के अनुरूप भावना की दृढ़ता नहीं होने देती है। वह बलात् अपने अपने रागादि के विषयों में मन को भी खिंचकर ले जाती है। भगवान उसके लिए दृष्टान्त देते हैं कि जैसे तीव्र आंधी नांव को विपरीत दिशा में घसीट जाती है। अतः भगवान इन्द्रियनिग्रह को अत्यन्त महत्व प्रदान करते हैं। जिसकी इन्द्रियां अपने वश में है, उनकी प्रज्ञा को स्थित होने में अर्थात् ज्ञान में निष्ठा में सुलभता होती है। 'वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।'

अतः अध्यात्म के साधक को बहिर्मुखता व इन्द्रियों की चंचलता के दोष को देख कर उसे नियंत्रित करके अन्तर्मुख होकर बैठ़ने का अभ्यास करना चाहिए। तब ही व्यक्तित्व में खण्ड की समाप्ति होकर समग्रता आती है और ज्ञान में निष्ठा सम्भव होती है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

# वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

अन्तःकरण तद्वृत्ति
साक्षी चैतन्य विग्रहः।
आनन्द रूपः सत्यः सन्
किं नाऽऽत्मानं प्रपद्यसे॥

तुम अन्त:करण और उसकी वृत्तियों के साक्षी-चैतन्य स्वरूप तथा आनन्दस्वरूप, सत्य तत्त्व हो। फिर भी तुम अपने स्वरूप को क्यों नहीं जानते?

# वाक्यवृत्ति

आचार्य ने पूर्व श्लोक में बताया कि पद के अर्थज्ञान के बगैर महावाक्य का ज्ञान सम्भव नही होता है। अतः पहले पद का ज्ञान आवश्यक है। महावाक्य में प्रयुक्त तीन पद है – तत्, त्वं और असि। उसमें से सर्व प्रथम त्वं-पद का अर्थ आचार्य यहां बता रहे हैं। पद के अर्थ को जानने में भी दो सोपान होते है। पहले उसके वाच्यार्थ अर्थात् शब्दमात्र का अर्थ क्या है; इसे जानना चाहिए।

त्वं अर्थात् तुम। जिसे तुम मैं की तरह जानते हो, उसकी ओर ध्यान केन्द्रित कराते हैं। आज हम अपने आपको क्या जानते है? जिस समय अपने बारे में परिचय दिया जाए तो अपना नाम, जाति, माता-पिता का नाम, आयु, राष्ट्रीयता व कार्यक्षेत्र बताते हुए उसके माध्यम से परिचय देते हैं। यदि विचार करके देखें तो यह सब सापेक्ष परिचय- जो किसी अन्य के परिप्रेक्ष्य से जानते है। अथवा अन्य के द्वारा दिया गया परिचय है।

जब कोई भी सापेक्ष परिचय, अन्य के द्वारा दिया गया अथवा अन्य पर आश्रित परिचय स्थायी नहीं हो सकता। अतः सतत हमारा

परिचय बदलता रहता है। सतत परिवर्तित हमारी यह अस्मिता ही हमें असुरक्षा की भावना प्रदान करती है। क्योंकि जिसके माध्यम से हमारी अस्मिता बनती है, वही सतत परिवर्तनशील, नश्वर, अपने आपमें अनित्य है। यदि हम इन सब के अभाव की कल्पना करें तो मानों हम अस्मिताशून्य हो जाएंगे, यह विचार ही हमें विह्वल कर देता है। ऐसे में हम वास्तविक रूप से कौन है; जो किसीके द्वारा प्रदत्त अस्मिता नहीं, और न किसी अन्य पर आश्रित है। ऐसी अपनी अस्मिता की शोध ही वेदान्त का विषय है। वेदान्त अपनी ही अनुभूतियों के अन्तर्विश्लेषण के माध्यम से शनैः शनैः अपने सूक्ष्म परिचय से अवगत कराते हुए अन्तर्यात्रा कराते हैं।

हम सतत बाहर जगत को देखकर विविध अनुभूतियां प्राप्त करते हैं। इन शब्दादि रूप दृश्य विषयक जगत की और ध्यान जाने पर उसका संज्ञान होता है और तत्-तद् विषयक वृत्ति हमारे अन्तःकरण में आती है। दृश्य देखने पर हम दृष्टा होते है, शब्द सुनने पर श्रोता होते है। यह सब वृत्तियों पर आश्रित हमारी

अस्मिता होने पर वह बदलती है। हमारा ध्यान उन विषय और तद्विषयक वृत्ति से हटाकर अपनी और केन्द्रित किया जा रहा है। सर्व प्रथम हम अपने देह को, उसके विकारों को जाननेवाले उसके दृष्टा है। उसकी और गहराई में जाने पर यह दीखता है कि हम अपने अन्तःकरण में भासित समस्त शब्द, स्पर्शादि रूप वृत्तियों को जानते है, इसके अलावा अन्तःकरण में उठ रहे विविध विकार, भावना आदि के भी संज्ञान से युक्त है। उसमें परिवर्तन से हममें परिवर्तन नहीं होता है। हम उन सबके साक्षी है - जिसका मैं की तरह, जीवन्त, चेतना के रूप में भान हो रहा है। वह हमसे पृथक् कोई और नही, किन्तु मैं ही है। वही 'अस्मि' अर्थात् मैं हूं की तरह भासित हो रही सत्ता, दृष्टा के रूप में भासित चेतना है। एवं वेदान्त प्रतिपादित सत्, चित् आनन्दस्वरूप है। आचार्य पूछते हैं कि यह मैं की तरह ही विराजमान है, क्या उसे तुम नहीं जान रहे हो? अर्थात् अपने से पृथक् अन्य सब को महत्वविहीन करके अपनी और ध्यान ले जाने की मात्र आवश्यकता है।

गीता और मानवजीवन
पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी
-: १२ :-
कर्मयोग

# गीता और मानवजीवन

कुरुक्षेत्र में युद्ध के आरम्भ होने के पहले ही अर्जुन का गाण्डीव उनके हाथ से सरक गया, वो स्वयं भी हताशा से शान्त होकर बैठ़ गया। और फिर भगवान से कहा कि, हे भगवन्! मैं युद्ध नहीं लड़ूंगा। अर्जुन निवृत्ति चाहता था। तब भगवान ने उसे कहा कि, तुम प्रवृत्त हो।' एक और निवृत्ति अपने जीवन का लक्ष्य है और दूसरी और अर्जुन जब निवृत्त होना चाहता था, तब भगवान कहते हैं, 'अर्जुन! तुम प्रवृत्त हो।'

भगवान् कहते हैं, 'हे अर्जुन! कोई भी मनुष्य निष्क्रिय नहीं रह सकता है। क्योंकि उसकी जो अन्तःप्रकृति है, वह उनसे कर्म करावाएगी ही।' और फिर भगवान कहते हैं कि 'यदि तुम अहंकार के कारण यह मानते हो कि 'मैं युद्ध नहीं करुंगा, और निवृत्त हो जाउंगा, जंगल चला जाउंगा, साधु का जीवन जीउंगा और भिक्षा मांगूंगा, तो यह तेरा निर्णय मिथ्या है। तुम्हारी प्रकृति

क्षत्रिय की है। यह प्रकृति ही तुझे नियंत्रित करेगी, और तुम्हें कर्म में लगाएगी।

यह अर्जुन जो कुरुक्षेत्र में युद्ध करना नहीं चाहता है, वह जंगल में जाकर वृक्षों को काटने लगेगा, क्योंकि उनके हाथ में खुजली मची रहेगी। कई लोग साधु बन जाते है और कहीं चले जाते है, जैसे कि ऋषीकेश। वहां जाकर विविध प्रकार की प्रवृत्ति में लग जाते हैं। कोई बागवानी करता है तो कोई यह - वह कुछ न कुछ करने में लग जाते है। कर्म करना कुछ गलत नहीं है। भगवान् के कहने का आशय भी यही है कि जब तक मनुष्य की प्रकृति में इस प्रकार की चंचलता है, रजोगुण है, तब तक वह शान्त बैठ नहीं सकता। इसलिए तुम प्रवृत्ति करो। आज तक जिस प्रकार से करते रहे हो, उस तरीके से नहीं, किन्तु हम जिस प्रकार से बताते हैं, उस तरह से करोगे तो वह निवृत्ति का हेतु बनेगा।

निवृत्ति का अर्थ समस्त प्रकार की परतंत्रता में से मुक्ति, समस्त इच्छाएं, कामनाओं से निवृत्ति, अज्ञान से निवृत्ति, दुःख से निवृत्ति। निवृत्ति अर्थात् स्वतंत्रता, इस

प्रकार की निवृत्ति प्राप्त करने के लिए कर्म इस प्रकार से करना चाहिए कि जिससे अन्ततः कर्म में से मुक्ति हो जाए। इस कला को कर्मयोग कहते है।

विश्व में प्रकृत्ति द्वारा सर्वत्र महान यज्ञ चल रहा है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, तारें, नक्षत्र, वृक्षादि, पशु-पक्षी सब यज्ञ की भावना से कर्म कर रहे हैं। इस यज्ञ में सर्वत्र संवादिता है। यह समस्त ब्रह्माण्ड एक महान ओर्केस्ट्रा है। मनुष्य भी उसका एक सदस्य है। अतः जिस प्रकार के सूर विश्व में चल रहा है, उसमें मनुष्य को भी अपने कर्म द्वारा स्वर मिलाना चाहिए। इसलिए यज्ञ की भावना से, समर्पण की भावना से कर्म करना आवश्यक है। धर्म और मूल्यों के आधारित कर्म करना, मन के आवेश, इच्छाएं, पसंद-नापसद में से मुक्त रहकर, जो कर्तव्य कर्म है, वही करना, अपनी शक्ति-सामर्थ्य को समग्रता से लगाकर निष्ठापूर्वक कर्म करना, यह कर्मयोग का प्रथम सोपान है।

इसका दूसरा अंग है प्रसादबुद्धि। कर्मफल के लिए कोई आग्रह नहीं करना, कर्मफलदाता ईश्वर होने से जो फल मिलता है, उसे ईश्वर का प्रसाद मानकर प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेना प्रसादबुद्धि है।

इस प्रकार कर्म करने से अन्तःकरणशुद्धि होती है, मन प्रसन्न, स्वस्थ और शान्त होता है, सब प्रकार की अशुद्धिओं से मुक्त होता है और ज्ञान के आविर्भाव के लिए परिपक्व बनता है, निवृत्त होता है।

प्रवृत्ति के माध्यम से ही निवृत्ति प्राप्ति करने की यही कूंजी है, यही कला है, यही योग है।

– ४६ –
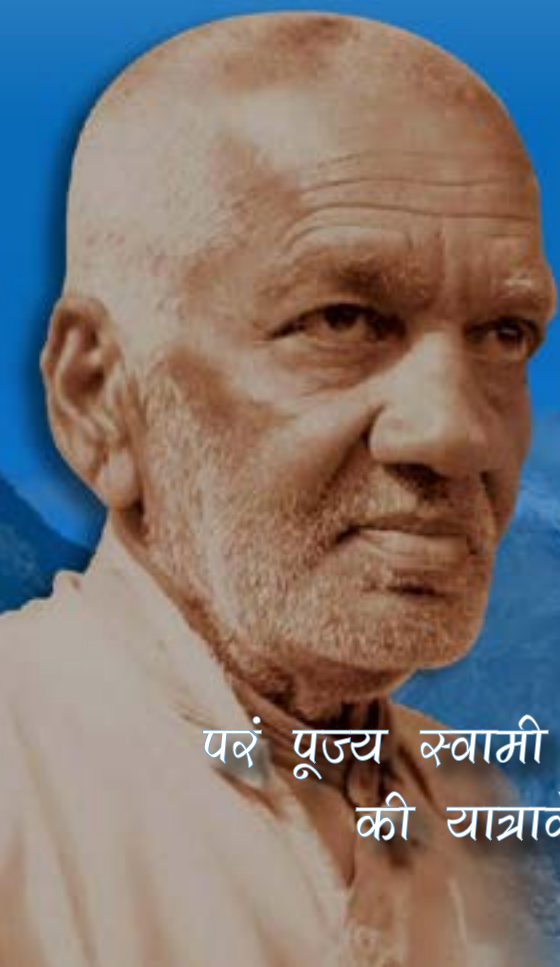
# गंगोत्री

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण
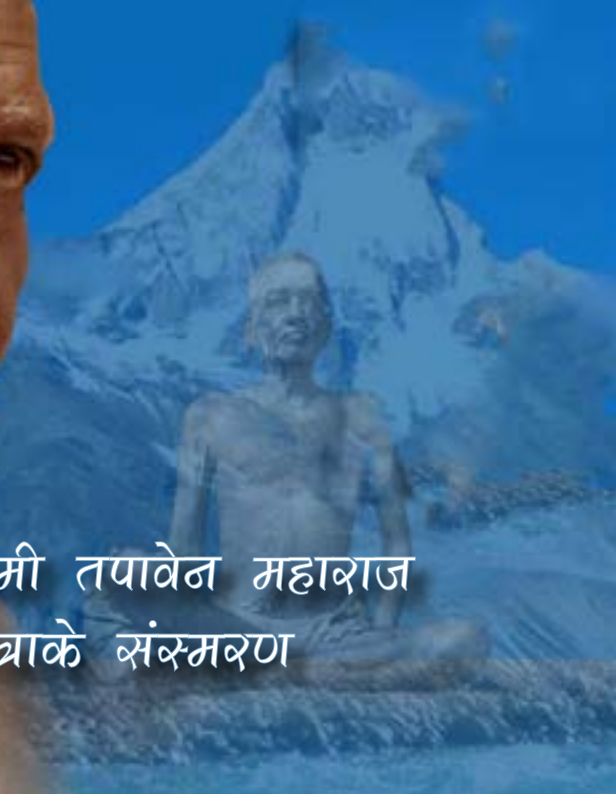
ईश्वर की शरण में विचरण करनेवाले भक्तजनों के योगक्षेम का यदि वह भगवान् ध्यान न रखे तो भगवान् शून्य वस्तु माने जाएंगे। यदि ईश्वर शून्य न हो और यदि ईश्वर पंचत्व को प्राप्त न हो गये हो तो उसके सबसे प्यारे भक्तजनों की कोई दरिद्रता, कोई विकलता या कोई हानि नही हो सकती।

गंगोत्री उत्तरकाशी से छप्पन मील की दूरी पर स्थित है। अति-आनंददायक पर्वतखण्डों से पवित्र तथा सतत दर्शन में भी तृप्ति न देनेवाले गंगाप्रवाह के किनारे किनारे पूर्वोत्तर दिशा में जानेवाला यह मार्ग प्रकृति का दर्पण है। जो लोग इधर-उधर घूमने आते है, वे भाग्यशाली और पुण्यवान् है। यद्यपि कुछ वर्ष पहले तक गंगोत्री, जम्नोत्री के मार्ग कुछ खतरनाक थे, किन्तु

अब वे सब कठिनाइयां दूर हो गयी है और वे सुगम बन गये है। उत्तरकाशी से सताईस मील उपर पराशर आश्रम है। साधारणतः यह विश्वास किया जाता है कि यह पवित्र स्थान वेदव्यास के पिता, शक्तिपुत्र, पराशर महर्षि का आश्रम था। गंगा की निकटवर्तिनी यह तीर्थभूमि मेरे मन को अत्यधिक आकृष्ट करती है। इसलिए मैं गंगोत्री के आवागमन में यहा अधिक समय तक रहा करता हू।

यहां से उपर की ओर अति–उन्नत तथा हिमाच्छादित गिरि शिखर शुरू हो जाते है। यह प्रदेश 'गंगाणी' कहलाता है। यहां से चौदह पन्द्रह मील उपर 'हरसत्' नामक शोभन समभूमि है। वहां से तीन मील उपर की ओर गंगोत्री के पुजारी ब्राह्मणों का निवासस्थान 'मरब्बा' नाम का एक बड़ा गाव है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि, यह ग्रामभूमि प्राचीनकाल में पुराण प्रसिद्ध मतंग महर्षि तथा मार्कण्डोदय महर्षि का पुण्य आश्रम स्थान थी। यह सर्वविदित है कि मतंग महर्षि नीच जाती में उत्पन्न हुए थे, किन्तु अपनी असाधारण तपःशक्ति एवं ज्ञान महिमा से वे सर्वादरणीय पूज्य पद पर पहुंचे हुए एक विलक्षण व्यक्ति थे। एक व्याख्यान में भगवान् बुद्ध ने उनके विषय में कहा है–

‘‘जन्म से कोई नीच नहीं होता, जन्म से कोई ब्राह्मण भी नहीं बन जाता किन्तु कर्म से ही नीच होता है, कर्म से ही कोई ब्राह्मण बनता है। मतंग नामक ऋषि श्वपाक जाति में जन्मा एक चाण्डाल था। यह मतंग अपनी महिमा से बहुत उंची ख्याति पा गया। अनेकानेक क्षत्रिय तथा ब्राह्मण उनके शिष्य बनकर उनकी परिचर्या में तत्पर रहे।’’

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)
श्री जनक चरित्र
- 03 -
प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

# श्री जनक चरित्र

महाराज जनक का जो चित्र मानस में उरेहा गया है, उसमें भक्ति का रंग ही सबसे उपर दिखाई देता है। मानों सीता की उपलब्धि से पहले भले ही वे ज्ञानयोगी अथवा निष्काम कर्मयोगी के रूप में प्रसिद्ध रहे हों, पर विदेहजा के आगमन के पश्चात् वे एक सरल हृदय भक्त के रूप में ही सामने आते हैं।

गोस्वामीजी को ऐसा प्रतीत होता है कि स्नेह तो उसके मन में प्रारम्भ से ही विद्यमान था, किन्तु एक मूल्यवान रत्न की भांति उसे उन्होंने अपने चरित्र की मंजूषा में छिपा रखा था। इस स्वर्ण मंजूषा के दो भाग ही योग और भोग के रूप में लोगों को दिखाई दे रहे थे। योग इस मंजूषा का आधार भाग था। भोग उपर स्थित भाग के रूप में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा था। किन्तु श्रीराम को देखते ही प्रेम का यह दिव्य रत्न प्रकट़ हो गया। यह अमूल्य स्नेहरत्न पाकर प्रभु को भी अपार प्रसन्नता होती है।

महाराज श्री जनक अपनी परिवर्तित मनःस्थिति को महर्षि विश्वामित्र

के समक्ष निःसंकोच भाव से रख देते हैं। वे यह स्वीकार करते हैं कि उनकी निष्ठा का केन्द्र निर्गुण-निराकार ब्रह्म ही था। रूप के मिथ्यात्व का ज्ञान उनके लिए केवल बौद्धिक तर्क का विषय न होकर अनुभूति का विषय था। किन्तु श्रीराम के सौन्दर्य ने उनके सहज विरागी मन को अपनी ओर इतना अधिक आकृष्ट कर लिया है कि वे कल्पना भी नहीं कर सकते कि पार्थिव आकर्षण उन्हें अपनी निष्ठा से च्युत बना सकता है। इसीलिए वे महर्षि के समक्ष अपनी जिज्ञासा रख देते हैं कि यह दोनों राजकुमार वस्तुतः कौन है? और वे उस सम्भावना का भी संकेत देते हैं जो उनके अन्तःकरण में श्री राम को देखकर कौंध उठी थी। क्या उपनिषदों के द्वारा प्रतिपादित ब्रह्म ही तो दो राजकुमारों का वेश बनाकर नहीं आ गया है! इसके पश्चात् तो वे एक सहृदय पिता के समान वात्सल्य भावना से भर उठते हैं। उनका चमत्कारिक ज्ञान वात्सल्य की रसवन्ती में पूरी तरह डूब जाता है। वे महर्षि के साथ दोनों राजकुमारों को लेकर महल में ठहरते हैं। इसके पश्चात् तो महाराज श्री जनक में वे सभी वृत्तियां दिखाई देता हैं, जो साधारण गृहस्थ के जीवन में देखी जा सकती हैं। फिर वे एक द्वन्द्वातीत महापुरुष के रूप में सामने नहीं आते ।

# कथा / प्रसंग

# सन्त अवज्ञा का प्रतिफल

# सन्त अवज्ञा का प्रतिफल

एक बार भगवान विष्णु के दर्शन हेतु सनक, सनन्दन आदि ऋषि वैकुण्ठ पधारें; परन्तु भगवान के द्वारपाल ने उन्हें प्रवेश देने से मना कर दिया। उससे ऋषिगण अप्रसन्न हो गए और क्रोध में आकर जय-विजय को श्राप दे दिया कि तुम राक्षस हो जाओ। जय-विजय ने प्रार्थना की और अपराध के लिए क्षमा मांगी। भगवान विष्णु ने भी ऋषियों से क्षमा करने को कहा। तब ऋषियों ने अपने श्राप की तीव्रता कम की और कहा कि तीन जन्मों तक तो तुम्हें राक्षसयोनि में रहना पड़ेगा और उसके बाद तुम पुनः इस पर पर प्रतिष्ठित हो सकोगे। इसके साथ एक और शर्त थी कि भगवान विष्णु या उनके किसी अवतारी स्वरूप के हाथों तुम्हारा मरना अनिवार्य होगा।

यह श्राप राक्षसराज, लंकापति, दशानन रावण के जन्म की आदि गाथा है। भगवान के द्वारपाल पहले जन्म में हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु

राक्षसों के रूप में जन्में। हिरण्याक्ष बहुत ही शक्तिशाली था और उसने पृथ्वी को उठाकर पाताल लोक में पहुंचा दिया था। पृथ्वी की पवित्रता पुनःस्थापित करने के लिए भगवान विष्णु को वराह अवतार धारण करना पड़ाथा। वराह अवतार में उन्होंने हिरण्याक्ष का वध कर पृथ्वी को मुक्त कराया था।

गोस्वामीजी बताते हैं कि, 'सन्त अवज्ञा तुरत भवानी'। यदि किसी सन्त, महात्मा व ज्ञानवान का अनादर करने पर उसका प्रतिफल अवश्य मिलता है। जय-विजय ने स्वयं को सर्वे-सर्वा मानकर ऋषियों की अवज्ञा-अनादर किया। उसका फल उन्हें तीन जन्मों तक भुगतना पड़ा।

# Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self
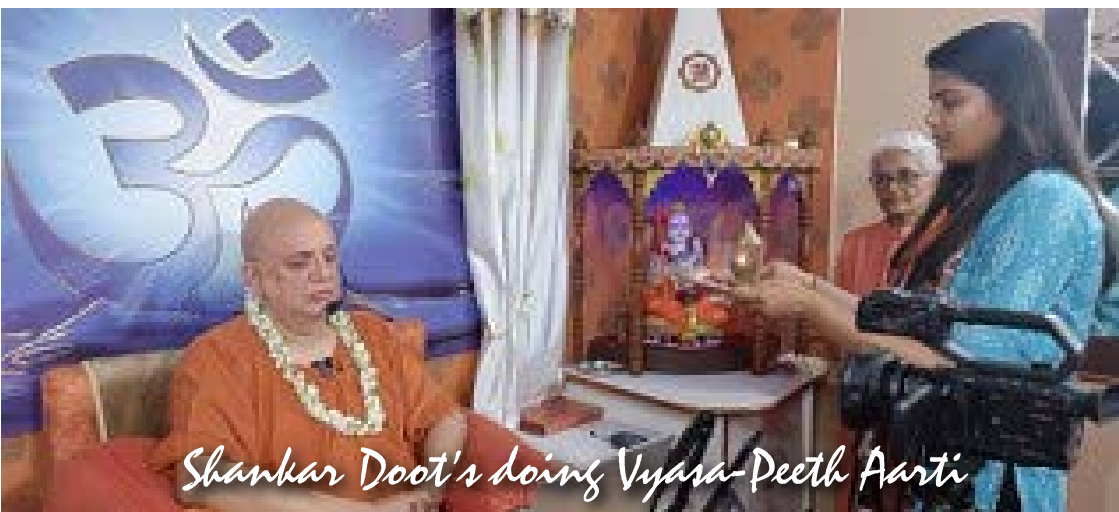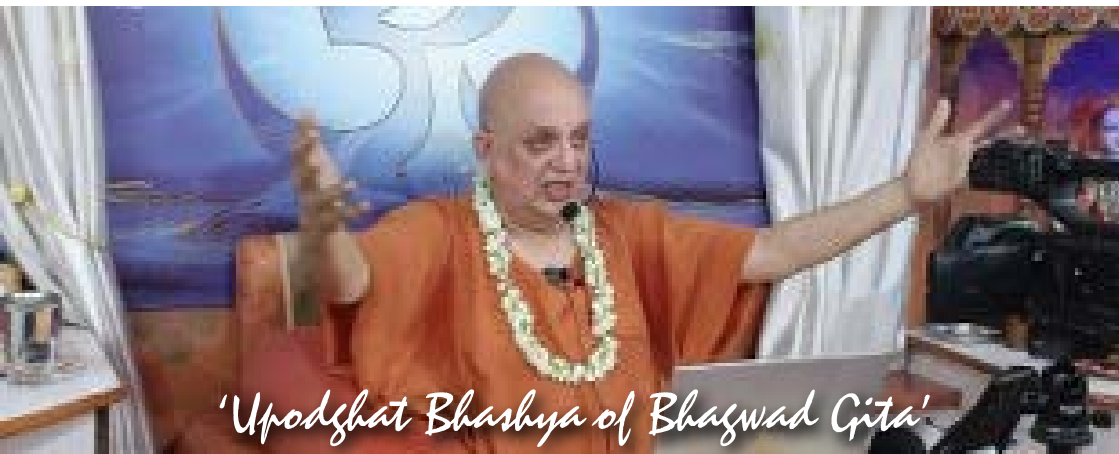
# आश्रम / मिशन समाचार

Shankar Doot's doing Vyasa-Peeth Aarti

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

o

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

Grand Shobha Yatra from Vedanta Ashram to Shankaracharya Dwaar-Sudama Nagar
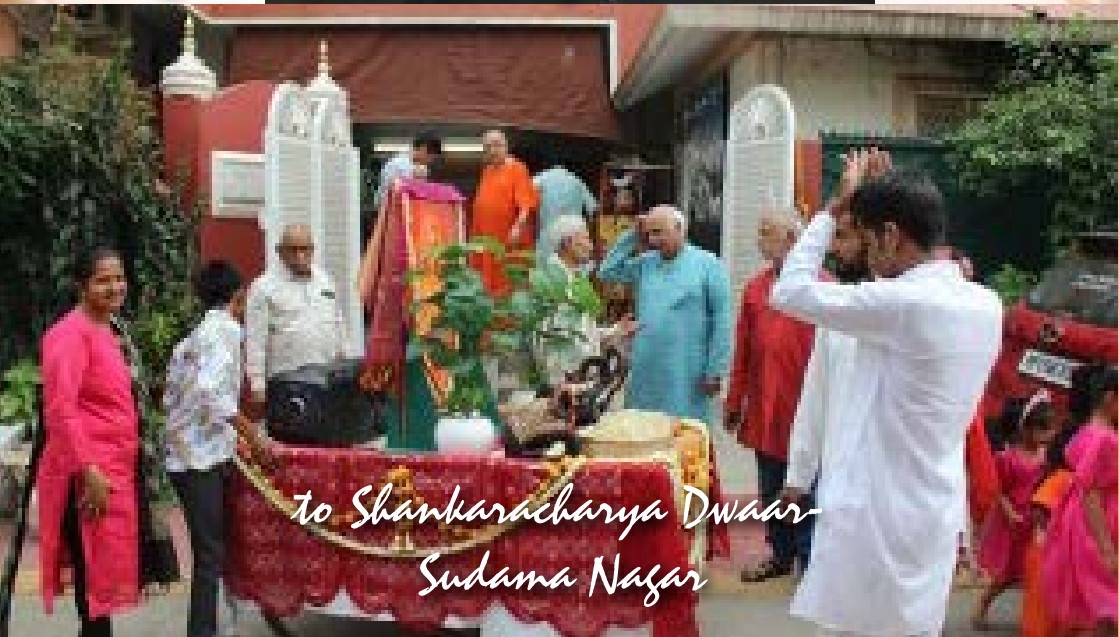
# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

Pooja and Arti at Sri Shankaracharya Dwaar

# आश्रम / मिशन समाचार

Concluded with Arti at Ashram

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार
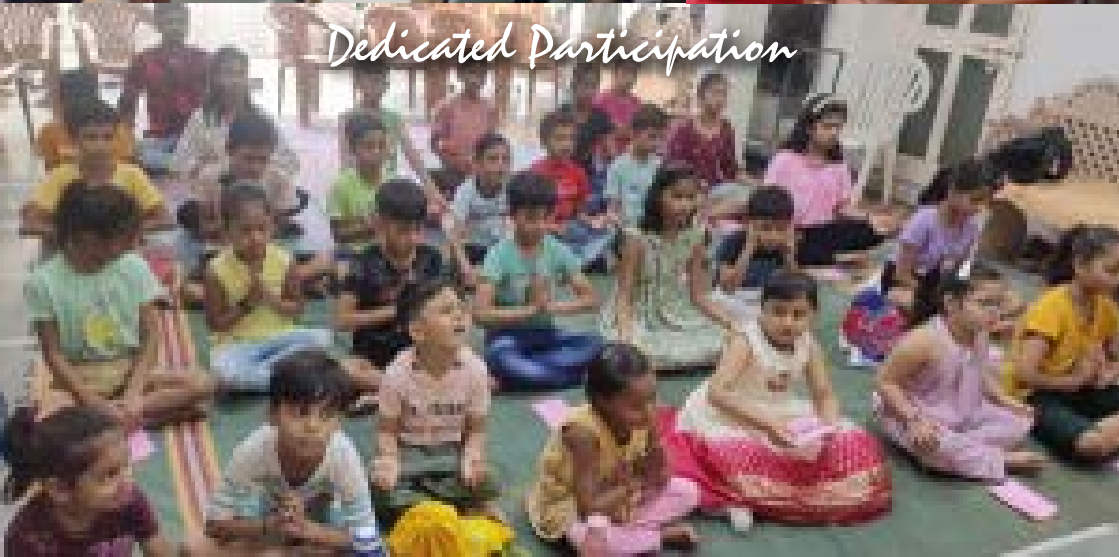
# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

Concluding Day
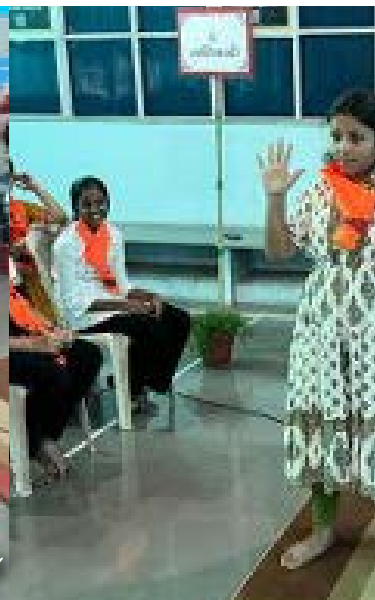
Show of CulturalPride and Joy
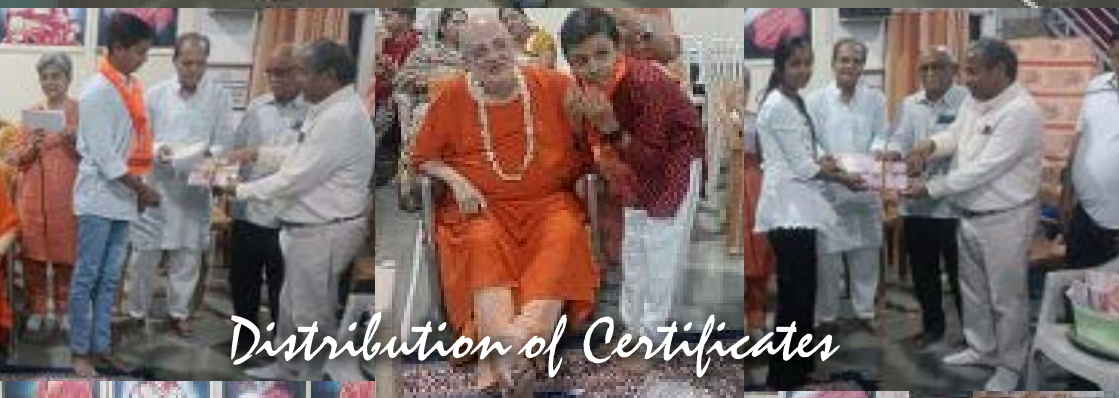
# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार
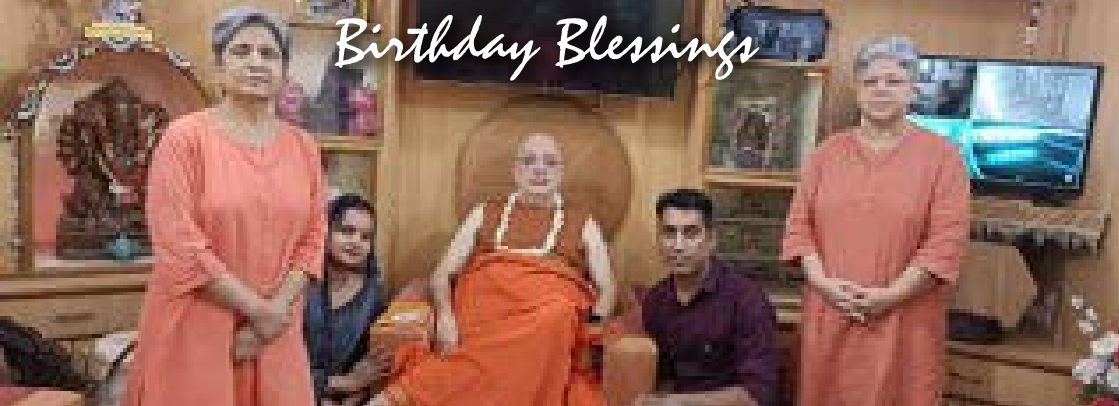
# आश्रम / मिशन समाचार
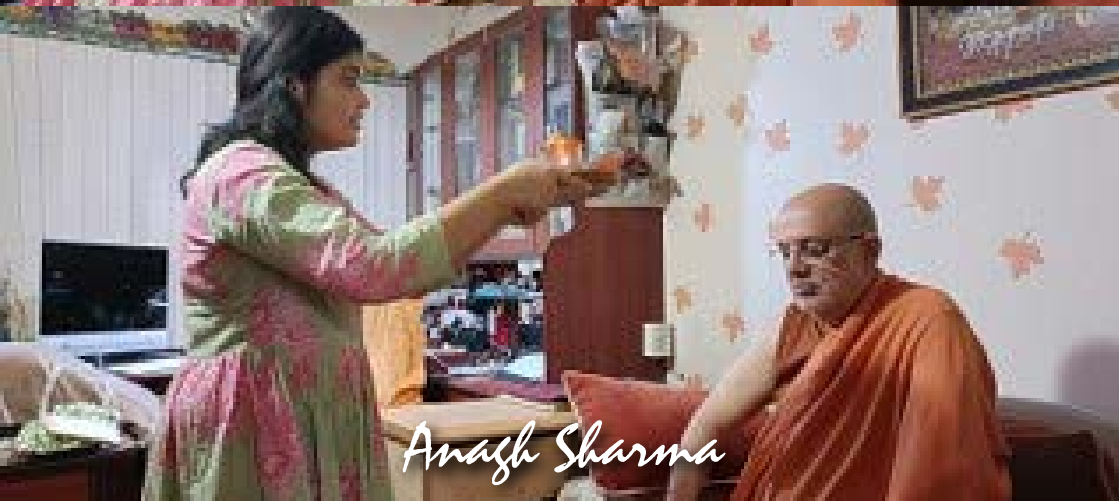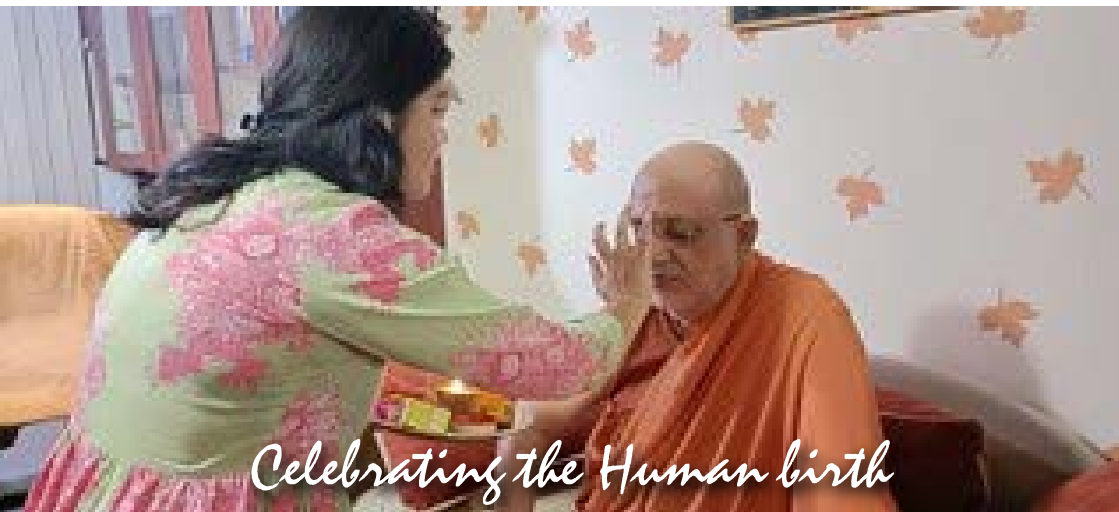
# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

## श्रीमद् भगवद् गीता

### (शांकर भाष्य समेत ) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

**पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी**

# आश्रम / मिशन समाचार

## गीता ज्ञान यज्ञ

दि. 23 से 29 जुन 2024;

रामकृष्ण केन्द्र, अहमदाबाद

अध्याय - 2 (सांख्य योग)

एवं हस्तामलक स्तोत्र

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

---

## गीता ज्ञान यज्ञ

दि. 3 से 9 जुलाई 2024;

गजानन मन्दिर, जलगांव

अध्याय - 17 (श्रद्धात्रय विभाग योग

एवं विवेक चूडामणि श्लोक - 2

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

एवं स्वामिनी पूर्णानन्दजी

# आश्रम / मिशन समाचार

## श्री कृष्ण जन्माष्टमी शिविर

२१ से २६ अगस्त २०२४

(२६ अगस्त – जन्माष्टमी पर्व)

सात्विक आहार
सात्विक विहार
सात्विक विचार

**C**elebrate
**J**anmashtami **F**estival with
**K**nowledge & Lots of **F**un

WITH

**पूज्य स्वामी आत्मानन्द**

Assisted by

स्वामिनी अमितानन्दजी

स्वामिनी समतानन्दजी, स्वामिनी पूर्णानन्दजी

एक द्विदिवसीय आवासीय शिविर

**विषय:**

**गीता अध्याय: ३**

**(कर्मयोग)**

*(The Art of Connectivity with God, in & thru every Action)*

गीता प्रवचन,

ध्यान, श्लोकपाठ

पूजा-अभिषेक,

भजन, प्रश्नोत्तर

स्थान : वेदान्त आश्रम
सुदामा नगर, इन्दौर

website : www.vmission.org.in
vmission@gmail.com

# Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

( Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

---

Audio Pravachans ( Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

## Monthly eZines

Vedanta Sandesh - June '24

Vedanta Piyush - May'24